देवबणी री बात

कृपाविस का सामुदायिक जंगल 'देवबणी/ओरण' संरक्षण अभियान

अंक 8 दिसम्बर 2007

जैव–ईंधन/ रतनजोत नीति; ओरण –देवबणियों व चारागाह जमीन हडपने की साजिश

पिछले दिनो 3–4 दिसम्बर को हैदराबाद मे जैव–ईधन की वर्तमान दशा और दिशा पर मनन करने नेशनल बायोफयूल कंसलटेशन का आयोजन किया गया जिसमे देश भर के वैज्ञानिक, विचारक, सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं, मिडियाकर्मी, विषय विशेषज्ञों ने भाग लिया और फिर खुलकर एक स्वर मे रतनजोत के खिलाफ अपने विचार रखे। क्योकि इस जहरीले पौधे ने पुरे देश में तॉडव मचा रहा है। इस महत्वपूर्ण बैठक मे देश के विभिन्न भागो मे जेट्राफा के विरुद्व चलाये जा रहे है अभियानो के विषय मे भी पता चला।

राजस्थान के प्रतिनिधियों ने भी राजस्थान की स्थिति के बारे मे कहा कि राजस्थान सरकार ने रतनजोत के उत्पादन व प्रसंस्करण के लिए प्रदेश में करीब 57 लाख हैक्टेयर गैर कृषि योग्य भूमि कुछ समूहों और निजी कम्पनियों को मुफत व रियायती दर पर आंवटित करने का निर्णय किया। राज्य मे बंजर जमीन 105 लाख हैक्टेयर, कृषि योग्य बंजर भूमि 48.49 लाख हैक्टेयर, गैर कृषि योग्य बंजर भूमि 56.51 लाख हैक्टेयर बताई जा रही है। गोरतलब है कि उपरोक्त तथा कथित गैर कृषि योग्य बंजर भूमि जो ओरण/देवबणियो, चारागाह की है लगभग सारी भूमि कम्पनियों को आवटिंत कर दी जायेगी। इन ओरणो की भूमि पर प्रदेश के लगभग 75 लाख चरवाहा समुदायों की आजिविका पशु पालन के रुप मे निर्भर है।

वैज्ञानिको का दावा है कि रतनजोत पर 18 किस्म के हानिकारक कीट पाये जाते है जो मानव, फसलो व वन्य प्राणियों के लिये बहुत घातक होते है। उदाहरणस्वरुप तेज गति से बच्चों द्वारा रतनजोत के जहरीले बीजो को खाकर बीमार पडने के मामले आये दिन सामने आ रहे है। यदि रतनजोत उगने के लिये रसायनो की मदद चाहिये

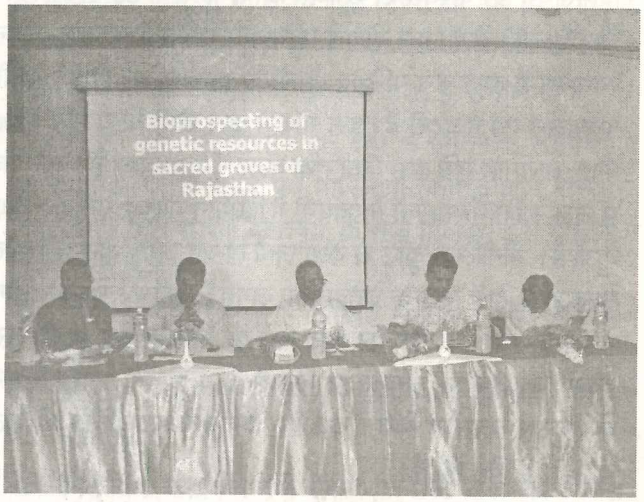

होगी तो फिर आप ही सोचिये इससे मिलने वाला बायोडीजल कैसे सस्ता होगा ? वैसे ही जल संकट का दानव सिर चढ कर बोल रहा है। राजस्थान जैसे रेगिस्तानी व सूखा ग्रस्त क्षेत्र के 57 लाख हैक्टेयर की इस अलाभप्रद्र फसल को बहुमूल्य पानी पीने से कौन रोकेगा ? फिर इतने विशाल क्षेत्र मे रसायनो विशेषकर कीटनाशको का छिडकाव कैसे हमारे पर्यावरण को विष मुक्त रख पायेगा। जब पहली बार रतनजोत भारत लाया गया था तो इसे बाड मे लगाये जाने वाले पौधे के रुप मे प्रचारित किया गया। लौगो ने इसे अपनाया और पाया कि खेतो की मेड पर इसे लगाने से जानवर विशे ाकर जंगली जानवर अन्दर नही आ पाते हैं। यह इसके जहरीलेपन के कारण ही था। जंगल (ओरण/देवबणियों) मे अनियमित ढ़ग से जहरीले रतनजोत के रोपण से वन्यप्राणियों के लिये अव्यवस्था का आलम हो गया हैं।

अतः राजस्थान मे चरवाहा समुदाय, अनेको स्वंय सेवी संस्थायें, राजनीतिज्ञ तथा संगठन चारागाह ओरणों की जमीन को बचाने के लिए जगह–जगह आंदोलन कर रहे हैं। कई स्वैच्छिक संस्थाओ ने सरकार के इस जमीन आवटंन प्रकिया को न्यायलय मे चुनौती दी है। कई सारी संस्थायें व संगठन इस पर अनुसंधान कर असलियत सामने लाने मे जुटे हुए है। चरवाहा समुदायो ने सरकार के इस निर्णय को कम्पनियो व भूमाफिया द्वारा जमीन हडपने की साजिश करार दिया है। अतः राजस्थान सरकार को इस पर गंभीरता से विचार कर निति परिर्वतन करना चाहिए ।

KRAPAVIS

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस)

कृपाविस बणी, गांव-बख्तपुरा

पो० सिलीसेढ़, जिला अलवर-301001 (राज.)

ई-मेल:krapavis_oran@rediffmail.com

सम्पादन : अमनसिंह व प्रतिभा सिसोदिया

'थारो चामुण्ड को चबुतरो आगे "पिलु का पौधा" पथरोडा गॉव की देवबणी की केस स्टेडी

समुदायों की आजीविका का साधन

"चामुण्ड माता की देवबणी' राजस्थान के अलवर जिले की मालाखेडा तहसील के पथरोडा नामक गॉव मे स्थित जो बहुत ही प्राचीन है। इस गॉव की कुल जनसंख्या 1200 है तथा कुल परिवारो की संख्या 110 है। जिनमे 50 परिवार अनुसुचित जाति के तथा 60 परिवार मेव पिछडी जाति के हैं। इस गॉव के परिवारो मे व्यक्तियों का रहन–सहन साधारण है तथा उन परिवार के लौगो का आय का साधन खेती, पशुपालन एवं मजदुरी है। इस गॉव मे कुल खेती योग्य भूमि 1100 बीघा, चारागाह भूमि 400 बीघा तथा बंजर भूमि 40 बीघा है। इस गॉव मे जल स्त्रोत के साधनो मे देवबणी में विधमान जोहड, एनीकट तथा कुआॅ है। भौगोलिक दृष्टि से देखा जाये तो यह जगह अरावली पर्वत मालाओं से घिरी हुई एक ऐतिहासिक जगह है यहॉ पर स्थानीय लोगों ने चामुण्ड माता के नाम पर बहुत सारे वृक्ष संरक्षित रखे हुऐ है। इस देवबणी का क्षेत्रफल लगभग 25 बीघा है जो वर्तमान मैराजस्व रिकार्ड के अनुसार चारागाह श्रेणी में दर्ज है। देवबणी में आबादी क्षेत्र की कुल दुरी 1/2 कि. मी. है।

यहॉ पर एक 'चामुण्ड माता' का चबुतरा था एवं एक पहाड मे चोरों की थडी थी वे दोनो स्थान अव्यवस्थित थें। ऐसा माना जाता है कि जब हमारे गॉव मे उस थड़ी पर चौर आ जाते है तो चावंड माता आवाज लगाकर गॉव वालो कों जगा देती है जिससे गॉव वाले जागकर चोरो को भगा देते थे। इस देवबणी के सम्बन्ध मे प्राचीन लोक जानकारी है कि "चामुण्ड माता" को पुजने से बरसात होती है तथा पशुओं मे रोग हो तो इसको पुजने से रोग नहीं होता है। इस वजह से गॉव के लौग एक साथ मिलकर जब खरीफ की फसल सुखने लगती है तब 'चामुण्ड माता' कि कढाई करते है। जब लौग यहॉ से प्रसाद लेकर जाते है तो आते वक्त वो बरसात मे भीग कर ही आते है जो आज भी यही घटना होती है।

इसी प्रकार चिड़ियों को चुग्गा डालने तथा चीटियां को आहार डालने की प्रथा भी है। उसकी वजह से वहॉ पर प्रत्येक व सांस्कृतिक मेले का आयोजन किया जाता है। एक बार चेचक बडी माता के प्रकोप से गॉव तबाह हो गया काफी संख्या मे बच्चे मर चुके थे तब 'चामुण्ड माता' की पुजा करने पर ही ग्रामवासियों को राहत मिली। गॉव मे एक बुजुर्ग महिला 107 साल की है जो आज भी विधमान है। वह 'चामुण्ड माता' के मन्दिर में रोजाना सुबह 5 बजे जाकर स्नान कर पुजा अर्चना करके व चीटियों को चुग्गा ड़ालकर आती थी। जिस समय वह पुजा अर्चना करने जाती थी तो उस समय रास्ते में जंगल के अन्दर शेर व चीता उस महिला को बैठे हुए मिलते थे तो वह 'चामुण्ड माता' से बोली कि हे 'चामुण्ड माता' तुम इनको हटा दो तो मैं आपकी पुजा अर्चना कर दुं व चुग्गा डाल दु तो वे दानो 'चामुण्ड माता' के प्रकोप से रास्ते से चले गये।

एक कहावत है कि "थारो चामुण्ड को चबुतरो आगे, है पिलु का पौधा"। यहां पीलू के वृक्षों की संख्या बहुतायत है। 'पीलू' एक देशज सदाबहार तथा छोटा आकार का सुन्दर व क्ष है जिसका वैज्ञानिक नाम सालवेडोरा ओलीओइडीज है। इस देवबणी की वर्तमान काल की स्थिति के तहत प्राचीन काल मे 20 से 30 साल पहले बरसात अच्छी होती थी इसलिए इस देवबणी की स्थिति वर्तमान में अच्छी है जिस वजह से इस देवबणी मे चारा वर्तमान के बजाय 20 से 30 साल पहले अच्छा होता था। इसमे पायी जाने वाली घास पान्नि के पुलो को पैसो मे नीलाम किया जाता है। इस देवबणी मे जल के स्त्रोत मे रुप मे एक प्राचीन जोहड है जिसमे वर्तमान मे पानी का अभाव है।

इस देवबणी मे सघन पेड–पौधे,घास, पशु–पक्षी तथा जानवर आदि विकसित हैं। इस देवबणी मे विधमान वर्तमान मे वृक्षों की प्रजातियों मे छीडा के 500 पौधे, ढाक के 150, कीकर के 10 पौधे, नीम के 10, कैर के 100, पीलू के 500, पापड़ी के 2, पीपल के 5, जाल के 100, केकडा के 100, सरस के 2, हिंगोट के 900, ढ़ाक के 10, तथा धोंक के 100 आदि प्रकार के वृक्षो की प्रजातियॉ पायी जाती है, जिनकी कुल संख्या 4000 के आसपास है। इनका उपयोग बकरी चराने, औ धी बनाने, आचार बनाने, पतल–दोने आदि बनाने तथा ईधन आदि मे इनका उपयोग किया जाता है। इनमे पहले से वर्तमान मे हिगोंट की प्रजाति के अलावा बाकि प्रजातियॉ कम हो रही है तथा हिगोंट की प्रजाति वर्तमान में बढ़ रही है। इस देवबणी मे कदम्ब तथा बड़ की प्रजाति 15 साल पुर्व पायी जाति थी लेकिन र्वतमान मे वो दीमक लग जाने के कारण समाप्त हो गयी है तथा इस देवबणी मे पीपल तथा सरस वनस्पति की प्रजाति पहले नही थी वो अब पिछले 10 सालो मे रोपित होने के कारण पायी जा रही है।

इस देवबणी मे कई प्रकार की जड़ी–बुटियॉ पायी जाती है जिनमे सदाहरी, ब्रजदन्ती, धोला खुरखी रोखडी, नगद बावरी, गोखरु देशी, गोखरु दखणी, ब्रह्म डन्डी, हड़ जुडी, लाल मुसली, उगां, सांटी, चैलाई, उडदी, काली पको, लाल पको, घास/दुब, पिचुल्या,

चीचडा, साती, तथा अडारनी आदि कई प्रकार की जड़ी–बुटी पायी जाती है। इस देवबणी मे नागफणी, पत्थर चट्टा, बरबरा, तथा सुखाल आदि कई प्रकार की जड़ी–बुटी पहले थी जो अब वर्तमान मे नही है।

इस देवबणी मे पाये जाने वाले वन्य प्राणियों में जरख, बिजु, खरगोश, नीलगाय, शेर, चीता, जरख, रोज, सियार,, खरगोश, सॉप, जंगली बिलाव, नेवला, गोहरा, छपकली, गिरगिट व झाउमुसा आदि कई प्रकार के वन्य प्राणी पाये जाते है। जिनमें वर्तमान मे जरखों कि संख्या घट रही है तथा बाकि जानवरो की संख्या बढ़ रही है। इस देवबणी मे बघेरा, हिरण, शेर, सुअर आदि जानवर 20 से 30 साल पुर्व पाये जाते थे जो वर्तमान मे यहॉ शिकार होने के कारण समाप्त हो गये तथा नीलगाय 20 से 30 साल पुर्व नहीं पायी जाती थी लेकिन वर्तमान मे पहाडों मे बरसात नहीं होने के कारण इस देवबणी मे आ गयी है। वर्तमान मे इस देवबणी मे बरसात, पेड़–पौधे, तथा शिकार के कारण वन्य प्राणियों कि कमी हुई है। वर्तमान मे देवबणी के वन्य प्राणियों को बचाने के लिये पेड़–पौधे लगाकर शिकार पर रोक लगाया जा रहा है। इस देवबणी मे पाये जाने वाले पक्षियों मे मोर, तीतर, उल्लू, चिडियॉ, कबुतर, कोयल, पपीहा, खाती चिडा, कोचर, बटेर, गिरगिल, कासाराणी, बया, व बुलबुल आदि कई प्रकार के पक्षी पाये जाते है। इस देवबणी मे पाये जाने वाली कीट पतंगो मे चमगादड, तितली, पटबीजणा, ततैया, मधुमक्खी, तातुण, चीटीं, चीटा, कुम्हारी, व भींमरी आदि कई प्रकार की कीट पतंगे पायी जाती है। इस बणी के ईधन को समुदाय की राय में ईधन के रुप में नहीं लिया जाता है।

इस देवबणी मे एक विशेष प्रकार का घास पुला (पान्नि) पाया जाता है, जिसके बारे मे यहॉ एक पहेली बडी प्रचलित है–

सिर सूखा, कन्द हरा, बन्ध लगा भारी।
देखी ही चाखी नहीं, लौग कहें खारी।।

ग्रामीण समुदायों को पुला (पान्नि) से निम्न लाभ मिलते है :

- पशुओं के चरने के लिए लगभग 6 माह चारा मिलता है।
- पान्नि के पुलो को हर साल नीलाम किया जाता है। 2004–2005 मे 7000 रु. का नीलाम किया गया जो ग्राम सावडी के जल सिंह ने तथा 2005–2006 मे 2800 रु. का नीलाम किया गया जिसे दौलत राम ने खरीदा।
- समुदायों द्वारा झोंपडी बनाना , रस्सी बनाना, डंडी, डलीया, झाडु बनानाए बिजना व छाजला आदि बनाने हेतु पान्नि का उपयोग करते है।
- कैर से आचार बनाया जाता है और कैर की दवाई भी बनाई जाती है। कैर का चुरन बनाकर दर्द मे पशुओं व मनु यों को दिया जाता है।

इस ओरण देवबणी के इतिहास तथा वहॉ के बारे मे जानकारी गॉव के ज्ञानवान लोग जिसमे श्री कल्लू योगी (बिच्छु काटने की दवाई के ज्ञानवान विशेषज्ञ) श्री मोहर सिंह (दॉतो कि दंद की दवाई के ज्ञानवान विशेषज्ञ) तथा गॉव के कई ज्ञानवान लौग जो कि गॉव मे लोगों के रोगो का परम्परागत उपचार करते है, उन्होने दी।

देवबणी की रक्षा, पुनरोत्थान हेतु वहॉ के जागरुक समुदायों व ज्ञानवान लौगो ने 'कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान' (कृपाविस/कृपा संस्था) बख्तपुरा, के साथ मिलकर इस देवबणी मे निम्न कार्य किये है:–

- ❖ पशुओं को पानी पीने के लिये जोहड, तथा पाल आदि का निर्माण करवाया।
- ❖ चिटियों व चिडियों को दाना डालने हेतु देवबणी मे चबुतरा बनवाया।
- ❖ मिट्टी के कटाव व नमी रोकने हेतु छोटे 'टक' का निर्माण कराया।
- ❖ देवबणी के अन्दर तथा वहॉ के ईदगाह के पास फल तथा छायादार पेड़–पौधे लगाये।
- ❖ चारे हेतु बणी मे घास के बीजो का छिडकाव कराया।
- ❖ लौगो के खेतो पर मेढ़ बन्दी का काम करवाया व फलदार वृक्ष लगाए।
- ❖ गॉव मे 10–10 की महिलाओं का एक मण्डल बनवाया।
- ❖ भैंस की उन्नत नस्ल के लिये भैंसा सांड उपलब्ध करवाया ताकि उन्नत नस्ल की भैंस ज्यादा दुध दे सके।
- ❖ देवबणी के नजदीकी खेती की जमीन पर मेडबन्दी, चेकडेम आदि निर्माण कार्य किये ।

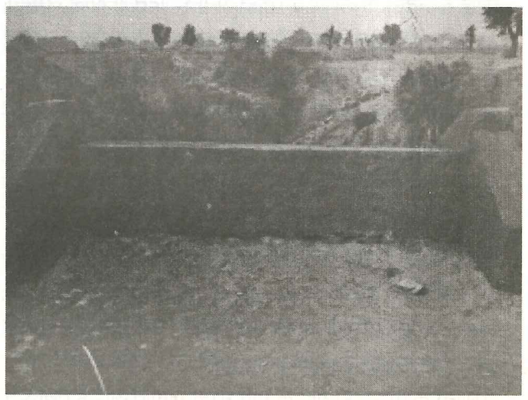

अदावल की देवबणी – जहॉ है भरपूर जंगल और पानी

कहा जाता है कि जल और जंगल के संरक्षण के लिये, अलवर जिले के दो विख्यात लोक देवता/साधू– गरबा व चुडशिद्व बाबा, एक बार दोनो कुछ समय एक ही स्थान पर रहे जिसे वर्तमान मे "अदावल की देवबणी" के नाम से जाना जाता है। यह देवबणी अलवर जिले के रुधं सीरावास (मीणा की ढाणी) नामक गॉव मे स्थित है। इस गॉव की कुल जनसंख्या 1000 है। इस गॉव मे मीणा समुदाय के लगभग 100 परिवार निवास करते हैं। जिनका मुख्य व्यवसाय खेती व पशुपालन है। इस गॉव मे कुल कृषि भूमि 800 बीघा है।

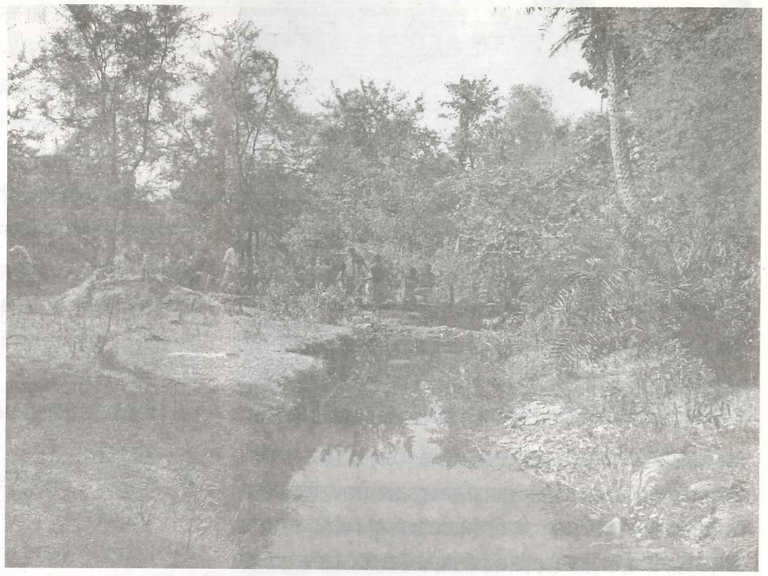

अदावल की देवबणी मे एक जल स्त्रोत है जो झरने के रुप में अविरत बहता है। जिससे देवबणी के वन्य प्राणियों तथा पेड–पौधो को हमेशा जल मिलता रहता है। यही नहीं इस देवबणी मे आस–पास के गॉवों जैसे– रोगडा, सीरावास, रुंध सीरावास, सिद्वकोट, आदि के हजारों पालतू पशु चरने आते है तथा दिनभर यही चरते व पानी पीते है। यह झरना एक छोटी नदी के रुप में नीचे गॉव की तरफ बहता है जिससे यहॉ के समुदाय के लोग अपने खेतो की सिंचाई हेतु जल काम में लेतें है। यहॉ पर झरने के द्वारा अच्छी सम्मत होने पर कम से कम 50 बीघा की सिंचाई होती है।

इस देवबणी का कुल क्षेत्रफल लगभग 50 हेक्टेयर है। इसमे सघन वनस्पति आच्छादित क्षेत्रफल लगभग 30 हेक्टेयर जबकि अधिक चराई व कटान के कारण वनस्पति अनाच्छादित क्षेत्रफल लगभग 20 हेक्टेयर है। इस देवबणी में गुलर, अकोल, छीला, पीपल, खजूर, धौंक, खीरणा, काला खैर, शालर, कडीयाल, खैरी, पापडी, हीगोंटा, कैर आदि अनेकों प्रकार की वृक्ष प्रजातियॉ पाई जाती है। इनमें गुलर, खजुर तथा पीपल के वृक्ष 15–20 साल पहले तक बहुतायत मे पाये जाते थे लेकिन वर्तमान मे वे पुराने होने के कारण तथा नये नहीं उगने के कारण काफी कम हो गये है। अकोल के व क्ष यहॉ पहले नहीं पाये जाते थे वो अब वर्तमान मे वहॉ के महात्माओं द्वारा बीज लगाने से हुए हैं।

अधिक चराई आदि के कारण इस देवबणी में पिछले कुछ वृक्षो में काफी बिगाड हुआ है। कृपा संस्था (कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान) के प्रयासो से यहॉ के गाव में पुन जाग्रति आई है तथा इस देवबणी के पुनरोत्थान हेतु बाबा अमरसिंह, पंडितजी व वहॉ के

समुदायों को साथ लेकर इस देवबणी के पुनरोत्थान हेतु निम्न कार्य किये है–

- पक्के एनीकट व जोहड बनवाये
- लूज बोल्डर चैकडेम बनवाये
- वृक्षारोपण विशेषकर स्थानिय फलदार पौधे लगाये
- चारे हेतु बणी मे घास के बीजो का छिडकाव कराया
- वन समिति हेतु ग्राम पंचायत से प्रस्ताव पारित कराके वन विभाग को उसकी प्रति भेजी

इस देवबणी के सम्बन्ध में लोक जानकारी है कि यहॉ पर चैत्र मास मे छठ को मेला लगता है तथा पॉचवे के दिन चुर्शद की पाठ पुजा होती है। गॉव वाले हर 15 दिन, 30 दिन में मेले भण्डारे का आयोजन करते रहते है।

इस गॉव के पशुधन में गाय, बकरी, भैंस, उॅट, आदि कई प्रकार के पशु पाये जाते है। जिनमें गाय 125, भैंस 200, बकरी 1000 तथा उॅठ 4 मिलाकर कुल 1329 पशु पाये जाते है। इस देवबणी मे नीलगाय, बारहसिंहा, हिरण, चीतल, जंगली सुअर, शेर आदि कई प्राकार के वन्य प्राणियों पाये जाते है। वर्तमान मे यहॉ के ओरण से चारे के रुप मे छीला के पत्ते तथा घास आदि प्राप्त होते है।

इस बणी से आस–पास के ग्रामीणों को उनके मकान बनाने हेतु छिले के पत्ते तथा यहां पर बहने वाले नाले से मकानों के बनाने हेतु पत्थर, बजरी, रोडी आदि सामाग्री बहुतायत में मिलती हैं। यदि मलकियत की दृष्टि से देखे तो इस पर वन विभाग का अधिकार है। गॉव के लोगों का मानना है कि वन विभाग के कर्मचारी केवल वसूली करने ही आते है, उन्होने कभी इसके विकास कोई काम नही कराया।

ओरण –देवबणियों मे पाये जाने वाले दो महत्वपूर्ण औषधिय पौधें

नीम भारत का वह एक बहु गुण सम्पन्न प्रसिद्व वृक्ष है जो कि भारतीय प्राय द्वीप में स्वाभाविक रुप से उगता है। जिसे अग्रेंजी मे आजाडीराक्टा इंडिकाए हिन्दी मे नीम, संस्कृत मे निंव, गुजराती मे नींवडो, कन्नड़ मे वेवू आदि प्रसिद्व नामों से जाना जाता है। इसका रोपण तो देश के सभी भागों विशेषकर गॉवो, जंगलो, ओरण –देवबणियों, खेतों, तथा सड़को के किनारे पर किया जाता है। इसके पत्ते पिच्छाकार (करोतकार) होते है। उनमें अनेको छोटे पत्रक होते है। इसके फूल सफेद सुगंधित छोटे होते है और पत्तो के कक्ष मे लम्बे गुच्छो मे लगते है। नीम के छोटे–छोटे फल आते जिन्हे निंवोरी कहते है। इसके कच्चे फल हरे तथा पके फल पीले रंग के होते है जो कि 1–2 सेमी लम्बे होते है। फलो में एक बीज होता है। नीम का वृक्ष राजस्थान में दरख के नाम से बडे वृक्षो मे जाना जाता है।

नीम के वृक्ष में पत्ते, जडे, तना, छाल, फूल, फल आदि सभी औषधी के काम आते हैं। छाल विषम ज्वर (मलेरिया) रोग तथा त्वचा रोग में लाभप्रद् है। नीम के पत्तो के कडवे होने के कारण उसके पत्तो का रस प्रतिदिन सेवन करने से अनेको रोग होते ही नहीं। त्वचा के रोग जैसे– फोडा, फुंसी, खाज, दाद, खुजली, आदि रोगों मे इसके पत्तो का उबला हुआ पानी घाव धोने मे लाभकारी होता है। परीक्षणों से यह सिद्व हुआ है कि पत्तो और जडो मे एंटीवायोटिक तत्व होते हैं जो कि त्वचा रोग में अवश्य लाभप्रद् होते है तथा नीम के फूल भी दवा में काम आते है। नीम के पेड के नीचे सोना, नीम के पेड की लकडी से खाना बनाना तथा नीम के वृक्ष के नीचे पानी रखकर पानी पीना लाभप्रद होता है। नीम के तेल से सिर की जूँ मर जाती हैं। नीम की पत्तियों को सरसों के तेल में गर्म करके तथा तेल को छानकर दो–तीन बून्द कान में डालने से कान का दर्द ठीक हो जाता है।

नीम की पत्तियों को पानी मे उबालकर पत्तियॉ निकालकर पानी से गलें की सिकाई करे। हरी पत्तियॉ पीस कर गिला लेप बनाकर शरीर पर लगाना तीन–चार घण्टे बाद नीम जल से स्नान करना उसके बाद नीम का तेल लगाना लाभप्रद है। छाल घिसकर (पानी के साथ) घिसी हुई दवा को घाव पर लगाने से घाव जल्दी ठीक हो जाता है। घाव धोने के लिए भी इसका इस्तेमाल होता है। कोमल टहनियों को चबाकर दॉतुन बना ली जाती है तथा नमक के साथ दॉत साफ किये जाते है। सम्पूर्ण वृक्ष, पत्ते, फूल, फल, छाल, शाखाऍ एवं जड दवा के काम आता है।

तुलसी माता भारत का सुपरिचित पौधा है। अनेक घरों मे तो इसकी पुजा होती है। पूज्य समझा जाता है इसलिऐ इनको तुलसी माता कहते है। तुलसी को काली तुलसी, राम तुलसी, भरमरी, बुवई तुलसी, तथा कपुरी तुलसी आदि कई नामों से जाना जाता है। तुलसी को अग्रेंजी मे होली– वेसिल (ओसीमुम सॉक्टम), हिन्दी मे तुलसी– वरुथनी, संस्कृत मे मंजरी–कृष्णा, कन्नड में विष्णु– तुलसी आदि नामों से जानते हैं। इस पौधे की उॅचाई 50 से 75 सेमी. लगभग होती है। यह अत्यंत रोमील पौधा होता है। पत्ते आमने–सामने जोडे मे होते है जो कि लगभग 5 सेमी. लम्बे, उपर नीचे दोनो और रोमिल होते है। उन पर छोटी ग्रथिंयॉ होती है। फूल छोटे, पौधा सुगंधित– गुलाबी या नीला श्याम फल बिल्कुल छोटे, बीज पीले या लाल से रंग के होते है। तुलसी का पौधा प्रायः घरों, उधानों, ओरण –देवबणियों,, मन्दिरो व धर्मबगिचियों मे लगाया जाता है।

पौधों मे तुलसी के पत्तें, जड़, बीज, औषधी मे काम लिया जाता है। चिकित्सा पत्तो से वैक्टीरियानाशक तेल प्राप्त होता है। पत्तों का रस या क्वाथ श्वास नली की सूजन, जुकाम, खॉसी, बुखार, अपच, दाद, खुजली, त्वचा रोग, पेचिस, उल्टी, अफरा, दर्द, कान का दर्द मे पत्तों के रस की बूदें कान में डालते रहें। तुलसी के पत्तो की चाय बनाकर जुकाम, खॉसी, ज्वर मे लाभकारी है: सामग्री – (1) तुलसी दल 7 नग (2) नमक काला 5 रत्ती (3) नीम की डोरी (4) पतासे 7 (5) सोठ 5 ग्राम (6) डोरा सात वीज (7) लोंग 2 नग। विधि – पहले एक गिलास पानी भगोनी मे लेकर गर्म करें फिर जब तेज उबाल आने लगे तब उपर लिखी औषधि डाल दे। (नोट– नीम की डोरी को पत्तदल का डन्ठल कहते है। डोरी, नमक, डोरा सात बीज, सोठ लोंग निम्न को पीस ले) चौथा भाग शेष रह जाये तब कुछ गर्म–गर्म रोगी को पिलाये, ध्यान रहे– प्यास अनुसार पानी पहले पी लें।

बच्चो के पेट दर्द मे– तुलसी और अदरख के रस का कुछ भाग लेकर थोडा गर्म (गुनगुना) करके पिला दें। तुलसी के पत्तो का रस निकाल (छानकर) गुनगुना (सहने करने लायक) करके बच्चों के कान मे डालने से दर्द बन्द होता है। तुलसी के पत्तो का रस शहद मे मिलाकर गर्म कर पीने से श्वॉस लेने मे लाभकारी होता है। तुलसी अर्क्पान रस बराबर गुनगुना कर पिलाने से दस्त खुलकर आता है तथा पेट फूलना अफरा कब्ज दूर होते हैं। मूत्र दाह मे– तुलसी के कोमल पत्ते रोज चबाने चाहिए, वमन मे– तुलसी अर्क तुलसी के पत्तो का रस) छोटी इलायची का चूर्ण 5 रत्ती, चीनी 5 ग्राम मिला कर खाने से उल्टी बन्द होगी। तुलसी के पत्तो का रस, चीनी 5 ग्राम मिला कर पीने से लू (झॉक) रोग मे फायदा होगा। तुलसी के पत्तो को कालीमिर्च के साथ पिसकर गोली बनाकर देवे तो हैजा मे फायदा होता है।

नोट– तुलसी 70 रोगो मे काम करती है। दाद, खाज, खुजली, त्वचा रोग 10, जुकाम, खॉसी, ज्वर, श्वॉस रोग 10, पाचन रोग 18, मूत्र रोग 5, विरेचक रोग 3 कृमि, बवासिर, अर्श आदि 2 तुलसी कपूर योग मिलाकर अन्य 22 रोग लाभप्रद है। अफ्रीका में इससे कपूर निकाला जाता है। कपूर योग तुलसी का नान रुप मे प्रयोग होता है। जैसे– शरीर को पीडा, मोच, स्नान आदि कराने में लोशन, मरहम आदि औषधी में काम आती है। इसकी मालायें बनाई जाती है, तुलसी कासंपूर्ण पौधा अनेकों औषधी तथा अन्य उपयोगी सिद्व हुआ है।

(लेखक वैध रामबाबू पाठक, सॉमई भरतपुर)

ओरण तथा सिल्वी–पेस्चर मॉडल द्वारा चारे का उत्पादन एवं संरक्षण

राजस्थान मे ओरण तथा सिल्वी–पेस्चर मॉडल द्वारा उपलब्ध चारे के उत्पादन एवं संरक्षण पर संभावित उपयोगिता के बारे मे चर्चाकरने के लिए लिए 17 नवम्बर को, एक संगोष्ठी का आयोजन ग्रामीण विकास एवं प्रौधोगिकी केन्द्र, भारतीय प्रौधोगिकी संस्थान दिल्ली (आई. आई. टी. दिल्ली) व कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस) अलवर के संयुक्त तत्वाधान में राजऋषि स्नातकोतर महाविधालय अलवर के सभागार मे किया गया है।

पशुपालन विभाग राजस्थान सरकार के सहायक निदेशक डा. ऐ. के. सिंह ने खेती व ओरणों – चारागाहों की जमीन से चारा व पालतू पशुओं की विशेषता के बारे मे बताया कि सच्चा किसान वही है जिसके पास जमीन व पशु व है क्योंकि बढती हुई जनसंख्या को देखते हुए आगे जाकर किसान का धन्धा खेती व पशुपालन हो जायेगा। उन्होने हरे चारे के बोने के बारे मे तथा कटींग करने के बारे मे बताया। उन्होने साइलेज को तैयार करने के बारे मे बताया कि ज्वार व मक्का के पकने पर काट कर उसकी बारिक कुट्टी करके उसमे गुड, नमक व युरिया का एक फूट चारा डालकर उस पर छिडकाव करके गड्डे को गोबर व मिट्टी से उपर से लेप करे ताकि हवा पास न हो सके।

श्री अमन सिंह ने ओरण व देवबणी के बारे मे बताया कि पुरे राजस्थान के ओरण किस तरह से चारे की समस्या को दूर करते है। ओरण देवबणियों ने ही गायों, बकरियों, भेंडों, हिरणों आदि सभी वन्य जीवो को सदा अभय दिया है। सभी यहॉ सुरक्षित है।

कृपाविस ओरण व देवबणियों को बेहतर सिल्वी–पेस्चर बनाने निम्न गतिविधियॉ संचालित करता है:

- स्थानिय प्रजाति के घास ओरण देवबणियों में उगाने का कार्य
- वृक्षारोपण व बीजारोपण विशेषकर स्थानीय प्रजाति तथा जड़ी बूटीं के पौधों का
- स्थानीय तथा दुर्लभ प्रजातियो की पौधशालाए उगाना
- देवबणी ओरण में भू संरक्षण (मिट्टी कटाव व नमी रोकने) हेतु 'टक', चैक डेमस, ट्रेंचीग, कन्टूर आदि का निर्माण
- देवबणी ओरण में जल स्त्रोतों जैसे तालाब, झरना, बावडी, जोहड, कुन्ड़, टॉका, कुइया, आदि का पुनरोत्थान
- देवबणी के सुरक्षा हेतु सामाजिक फेंसिग / कोरा पारा
- बेहतर प्रबन्धन हेतु वन समिति या स्वयं सहायता समुह जैसे ग्राम स्तरीय संगठनों का गठन

आई. आई. टी. दिल्ली की डा. सत्यवती शर्मा ने पशुओं के चारे व चारागाह के संरक्षण व उसके उत्पादन के बारे मे बताया कि आई. आई. टी तथा कृपाविस बख्तपुरा के संयुक्त तत्वाधान मे सिल्वी–पेस्चर मॉडल तथा ओरण विकसित करके चारे से ग्रामीण व्यवस्था को मजबूत बनाने के बारे मे बताया। राजऋषि स्नातकोतर महाविधालय अलवर के उप प्रधानाचार्य डा. के. के. बांगिया ने चारे के उत्पादन एवं संरक्षण पर कॉलेज के छात्रो को बताया कि जो छात्र यहॉ से शिक्षा लेकर जा रहे है वो छात्र उस शिक्षा को किताबो तक सीमित न रखे बल्कि गॉवो मे जाकर ग्रामवासियों व पशुपालको को तक उस शिक्षा का प्रचार–प्रसार करे व चारे के संरक्षण के लिये उन लोगों को जानकारी देवें।

डा. शिवधर मिश्रा वरिष्ठ वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली ने चारे का संरक्षण व भण्ड़ारण के बारे मे जानकारी दी तथा हे व साइलेज बनाने की विधियों के बारे मे विस्तार से बताया। हे बनाने के दौरान जब चारे में सूखने के पश्चात 15 प्रतिशत से कम पानी रह जाये तो उसे सुखाने के लिये सूर्य की रोशनी मे खुली अवस्था मे रखना चाहिये। हे बनाने के लिये उपयुक्त फसलो मे दाल वाली चारे की फसल तथा घास परिवार वाली चारे की फसल मुख्यरुप से उपयुक्त है। हे बनाने व भण्ड़ारण की विधियो मे ग्रामीण विधि, झोपडीनुमा आकार के प्रयोग की विधि तथा तिपाई विधि मुख्य है। हे बनाने की विधि के अन्तर्गत खेत में ही सुखाने कि विधि, तिपाही विधि, तथा फेन्स विधि (बाढ लगाने) की विधि मुख्य है। पत्ती चारा बनाने के लिये नीम, बेर, बबूल, सूबबूल, कीकर आदि की पत्तियों को ठीक पहले तोड कर छाया में सुखा लेना चाहिये।

राजऋषि स्नातकोतर महाविधालय के वनस्पति शास्त्र विशेषज्ञ डा. वी. एन. डे ने भी विषय पर अपने विचार रखें तथा आई. आई. टी. व कृपाविस का आभार जताया कि ओरण व चारा उत्पादन जैसे विषय पर एक संवाद शुरु किया।

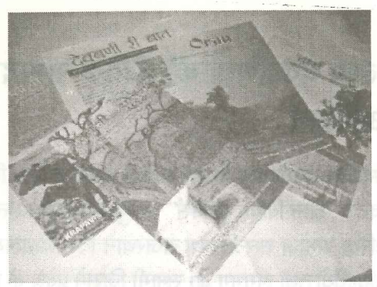

15 अक्टुबर 2007

प्रिय अमन सिंह,

आप द्वारा भेजी पत्रिका "देवबणी री बात" मिली, इसके लिये धन्यवाद। यह अच्छी बात है कि "देवबणी री बात" के माध्यम से आप प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के काम में लगे हुए हैं। हमारे राजस्थान के संदर्भ में यह काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी पर जीवन टिका हुआ है। हम सब लोगों को अपने प्रयसा जारी रखने चाहिये और इन्हें जनहित में ओर प्रभावी बनाने चाहिये।

शुभकामनाओं सहित।

आपका

हीरालाल शर्मा

सचिव, सहयोग संस्थान, उदयपुर (राज.)

17 Oct 2007

Dear Sir,

We have received August edition of "Devbani ri Bat". All the articles in this issue are excellent and raise the important issues existing at the grassroots. I shall be grateful if you could send us a few more publications of KRAPAVIS and a CD of the documentary DEVBANI RI BAT, to Seva Mandir.

Regards

Shailendra Tiwari

Seva Mandir, Old Fatehpura, Udaipur (Rajasthan)

19 Jun 2007

Dear Mr. Aman Singh,

Hello! It is lovely to hear from your end and known all about the development in your programme. Thanks for sending the printed brochures and also acknowledging SGP.... Hope all other project activities are going on smoothly.

Yes, I have gone through the newsletters and found it interesting. Keep it going....! Well, hope you are sending all the progressive reports to Regional offices and NC secretariat office. Please ensure links to the local and state governments.

With Warm Regards

Prabhjot sodhi

National Coordinator,

UNDP GEF Small Grants Program, New Delhi

ओरण हमारा जीवन

'ओरण' हमारा जीवन नामक पुस्तक श्री भुवनेश जैन, जिला युवक समन्वयक, नेहरू युवा केन्द्र बाडमेर द्वारा लिखी गई है। जिसमें बाडमेर जिले के ओरणों की स्थिति जानने हेतु सहभागी सीख प्रकिया के तहत सूचनाओं का संगलन किया गया। जिसका उद्देश्य निम्न था:–

- ओरण एवं गोचर के मुद्दे पर जन जागरण शिक्षण, नियोजन के लिए आधारभूत सामग्री तैयार करना।
- ओरण संकल्पना को समुदाय की नजर से प्रस्तुत करना।
- रूचिपूर्ण, सूचनात्मक, प्रेरक संसाधनों के बारे में जानना। सूचनाओं, उपलब्ध स्थानीय ज्ञान एवं संसाधनों के आधार पर समस्याओं को समझना।
- समस्याओं के निराकरण के रास्तों का पता लगाना जिसके आधार पर ओरण एवं गोचर को पुनः जीवित, पुनः स्थापित किया जा सके।
- ओरण से जुडी सांस्कृतिक परम्पराओं और मूल्यों का समझना, जिसके आधार पर ओरण व गोचर को पुनः जीवित, पुनः स्थापित किया जा सके।
- ओरण की महत्ता को समझना ताकि वर्तमान पिढी इस विरासत को संजोकर रख सके। अपनी जिम्मेदारी को समझ सके। जिम्मेदारी को निभाने के लिए कार्य कर सके।
- ओरण की विविधता और सुन्दरता की रक्षा करना। ओरण का सम्मान करना।

लेखक द्वारा अनेक वर्षो से इस मुद्दे पर सूचनाओं का संकलन किया जा रहा है लेखक द्वारा लिखित विभिन्न आलेख, शोध पत्र के अंशो का उपयोग भी इस पुस्तक में किया गया है सहभागी सीख प्रकिया से समुदाय के दृष्टिकोण, अनुभव, क्षमता से ओरणो को समझने एवं विकास के लिए नियोजित करने में उनकी सहभागिता को सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया। लोक अनुभव लोक बुद्विमता को तैयार करते है और सही लोक बुद्विमता ओरणो की स्थिति को बेहतर बनाने में मदद करती है। लोक समुदाय का ज्ञान, विज्ञान, परमपरा, मूल्य ओरणों के लिए निति, कार्यक्रम, प्रबन्ध एवं प्रशिक्षण सामग्री बनाने में मदद कर सकते है। इस अध्ययन विधि में मानचित्र, समयावधि, प्रकिया, प्रवाह चित्रण, वरीयता मेट्रिक्स आदि विधियों का उपयोग किया गया है।

इस पुस्तक का प्रकाशन सोसायटी टू अपलिफ्ट रूरल इकोनोमी (श्योर), गुरूद्वारा रोड, बाडमेर, राजस्थान द्वारा किया गया है। पुस्तक का मूल्य रूपये 450 अंकित है।

अकादमिक व स्वयं सेवी संस्थाओं का ओरण तथा देवबणियों की जैविक सम्पदा संरक्षण हेतु साझा अभियान

राजस्थान के ओरण तथा देवबणियों मे उपलब्ध जैविक सम्पदा के संभावित उपयोगिता के बारे मे चर्चा करने के लिए लिये एक संगोष्ठी का आयोजन "कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान" (कृपाविस) अलवर व "ज्ञान विहार यूनिवर्स" जयपुर के संयुक्त तत्वाधान में 18 अक्टुबर 2007 को जयपुर मे किया गया है। इस कार्यशाला का उद्घाटन प्रसिद्व समाज शास्त्री तथा राजस्थान विश्वविधालय के पूर्व कुलपति प्रो. के. एल. शर्मा ने किया। इस कार्यशाला में 50 स्नातकोत्तर कक्षा के विधार्थियों तथा लगभग 40 संभागी जिसमे प्रदेश के प्राणिशास्त्री, वनस्पति वैज्ञानिक, पर्यावरणविद्, जैव तकनीक तथा विभिन्न शोध संस्थानो से जुड़े वैज्ञानिक तथा विचारकों, सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं, मिडियाकर्मी, विषय विशेषज्ञों ने भाग लिया। प्रो. के. एल. शर्मा ने अपने उद्बबोधन मे बताया कि ज्यादातर देवबणी गॉवो मे पहाडी क्षेत्रो मे पायी जाती है। ओरण–देवबणी के अन्तर्गत पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, देवी–देवता का मन्दिर, तथा पानी के लिए जोहड़, टक, नदी, तालाब, झरना आदि होते है। उन्होने सीकर जिले के "जीर्ण माता का ओरण" का दृष्टान्त रखते हुए ओरण व देवबणियों के संरक्षण की महती आवश्यकता बताई तथा कहा कि इन पर समुदायों की 'संबन्धता की अनुभूति' होने के कारण ही आज भी ओरण व देवबणियॉ बची हुई है।

श्री अमन सिंह ने ओरणों के फैलाव के बारे मे बताया कि हमारे देश में लगभग 10 लाख हैक्टेयर क्षेत्रफल ओरणों से आच्छादित है। अकेले राजस्थान के रेगिस्तान प्रभावित 9 जिलों मे 537000 हैक्टेयर क्षेत्रफल ओरणों से आछादित है। राजस्थान में कुल 25000 ओरण–देवबणी जिनमे 1100 मुख्य है। वही दूसरी तरफ लगभग 9 लाख हैक्टेयर क्षेत्रफल जो राजस्थान के कुल 27 वन्य जीव अभ्यारणो के अन्तर्गत आता है, उसके प्रबन्धन हेतु अरबो रुपये खर्च होता है और प्रबन्धन फिर भी ठीक नही, । अतः यह विचारणीय सवाल है कि जंगल का संरक्षण कौन कर रहा है ?

प्रो. प्रकाश बाकरे ने अपने सम्बोधन मे कहा कि हमारे इन वनो मे कई प्रकार कि जैविक सम्पदा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। इनमे मौजूद वनस्पति एवं जीव जन्तुओं के उपयोग के बारे मे ज्ञान हमारे गॉव, गॉव मे बड़े बुजुर्गो के पास उपलब्ध है। आवश्यक्ता है हमें इन वनस्पतियों एवं जीवो के बारे मे वैज्ञानिक अध्ययन की तथा उन रसायनो के अनुसंधान करने कि जिनसे विभिन्न रोगो का उपचार किया जाता है और इन्हे वैज्ञानिक पत्रिकाओं मे प्रकाशित करने कि ताकि इस ज्ञान का उपयोग चोरी छुपे कोई अन्य देश या बहुउद्देशीय कम्पनियॉ ना कर सकें। इन ओरणो का महत्व और इसलिए बढ़ गया है क्योंकि इनमे उपस्थित जीव सदियों के प्रकृति द्वारा चयनित तथा विकसित कि गई हैं। डा. धीरेन्द्र देवर्षि ने ओरण–देवबणियों के संरक्षण पर इसलिये जोर देने की आवश्यकता बताई जिससे कि राजस्थान मे पक्षियों की पाई जाने वाली 500 प्रजातियॉ का संरक्षण हो सकें।प्रो. वाई. डी. त्यागी, ने प्रदेश, विशे ाकर ओरणो मे पाये जाने वाले औषधि पौधो की इन्वेंटरी, इतिहास तथा वनस्पति शास्त्र की प्रकिया के बारे मे बताया। डा. कृष्ण मोहन ने जैविक सम्पदा की संभावनाओं को देखने के विभिन्न तकनीकी पहलुओं व बिन्दुओं को रखा। जिसमे उन्होन जैव विविधता पर चर्चा करते हुए विभिन्न बिन्दु मारफोलोजीक्ल, फिजोलोजीक्ल, मेटाबोलीक, जेनेटिक आदि बिन्दुओं पर विस्तार से बताया ।

प्रो के. के. शर्मा ने जैव–विवधता के बारे मे बताया कि पूरे राजस्थान की जैव विविधता का ड़ाक्यूमेंट तैयार हो और उसके लिए एक संदर्भ केन्द्र स्थापित हो तब ही जैव विविधता का संरक्षण हो सकेगा। उन्होने अजमेर के सपेरो के मन्दिर की देवबणी के बारे मे भी बताया। कार्यशाला की सघन गोलमेज चर्चा मे निम्न 3 मुख्य बिन्दुओं पर सहमति हुई :–

1. सभी सम्भागियों को अपने आस–पास के ओरणों मे मिलने वाली वनस्पति, वन्य प्राणी, चिड़ियों आदि की इन्वेन्टरी तैयार करने मे सहयोग करेगें तथा जिसके पास जो भी डाटा (आंकडें) मय डिजिटल फोटोग्राफ के है उसका डाटा बेस (पूल) हेतु सभी प्रो.के. के. शर्मा अजमेर विश्वविधालय को भेजे।
2. ओरण देवबणियों मे पायी जाने वाली वनस्पतियों, वन्य प्राणियों के इन्वेन्ट्राइजेशन (वर्गीकरण) कार्य को व्यापक स्तर पर करने व जागरुकता लाने हेतु एक अपील भेजी जायेगी जिस हेतु कॉलेज एजुकेशन निदेशालय के डा. धीरेन्द्र देवर्षि को सर्वसम्मति से मनोनित किया।
3. "बायो परस्पेक्टिव" के स्त्रोतो का इस्तेमाल करने पर समुदायों को उपयुक्त मुआवजा मिले इस हेतु भी अभियान व जागरुकता लाने पर जोर दिया जावेगा।

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस), बख्तपुरा, अलवर (राज०) द्वारा जनहित में प्रसारित।
इस पत्रिका के लिए सहयोग 'विश्व संघ विकास कार्यक्रम ' तथा 'पर्यावरण शिक्षण केन्द्र' से प्राप्त।
मुद्रक: जय बाबा कार्डस एण्ड प्रिन्टर्स, स्टेशन रोड़, अलवर। मो. 9414893348. लेआउट सहायक : पवन कुमार शर्मा